फिर उगला जहर ... 03
वनवासी विद्यालय में आए अभिनेता अक्षय कुमार 10
गोबर-गोमूत्र के उपयोग का प्रशिक्षण 14

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

फाल्गुन शुक्ल 7, वि.2080,युगाब्द 5125, 16 मार्च, 2024

स्वाधीन भारत की शर्मनाक घटना

हिंदू महिलाओं के यौन शोषणकर्ताओं को राजनीतिक संरक्षण ?

 # संदेशखाली

patheykan@gmail.com @patheykan @patheyofficial @patheykanofficial @patheykanofficial

प्रांत प्रचारकों की जोधपुर बैठक (16 से 19 नवम्बर,1990)

श्रीरामजन्मभूमि विशेषांक (फरवरी, 2024) के पृष्ठ 21 पर राजस्थान के जोधपुर में सम्पन्न प्रांत प्रचारकों की बैठक का वर्ष 1988 लिखा गया है, उसे 1990 पढ़ें। उस बैठक का पाथेय कण को उपलब्ध कराया गया चित्र नीचे दिया जा रहा है।

जमीन पर बैठे हुए बाएं से दाएं : सर्वश्री हस्तीमल जी, भू.कृ.चौथाईवाले जी , प्रेमचंद जी गोयल, इंद्रेश कुमार जी, श्रीकांत जी जोशी, वी.भगैय्या जी, श्याजी गुप्त, वी.षडमुखानाथम् जी, एस.रामन्ना जी, मधुकर जी लिमये, रामभाऊ जी हल्देकर **कुर्सी पर बैठे हुए :** सर्वश्री मधुकरराव जी देव, सुरेशराव जी केतकर, गोविंद कृष्ण जी भुस्कुटे, लक्ष्मणराव जी भिडे, यादवराव जी जोशी, प्रो.राजेन्द्र सिंह जी, म.द. देवरस जी, हो.वे.शेषाद्रि जी, आर.हरि जी, कु.सी.सुदर्शनजी, मा.गो वैद्य जी, दत्तोपंत जी ठेंगड़ी, सूर्यनारायण जी राव, केशवराव जी गोरे **खड़े हुए प्रथम पंक्ति :** सर्वश्री आर. गोपालन जी, शरदचंद्र जी महरोत्रा, जी.बी अजित कुमार जी, ब्रह्मदेव जी, अनंतरामचंद्र जी गोखले, बाबाराव जी पौराणिक, अशोक जी प्रभाकर, प्रभाकर राव जी अंबुलकर, एन. कृष्णप्पा जी, जयगोपाल जी, लालजी भाई पटेल, विश्वनाथ जी, मदनदास जी देवी, सुरेश जी सोनी, कृष्णदास जी माहेश्वरी, दा.आ.दाते जी, राजेन्द्र कुमार जी, दा भि पालधीकर जी **खड़े हुए दूसरी पंक्ति :** सर्वश्री कौशलेन्द्र कुमार जी, ठा.रामसिंह जी, प्रतापनारायण जी मिश्र, शांताराम जी सर्राफ, श्रीकृष्ण जी मोतलग, लक्ष्मण सिंह जी शेखावत, लज्जाराम जी तोमर, एस.सेतुमाधवन जी, प्रसन्न कुमार जी पाणीग्रही, दिनेश चन्द्र जी, बी.आर. सोमय्याजुलू जी, मधुभाई जी कुलकर्णी, बसंत गोपाल जी केलकर **खड़े हुए तीसरी पंक्ति :** सर्वश्री नारायण दास जी, सोहन सिंह जी, किशन भैय्या जी, मुकुन्दराव जी पणशीकर, शिवप्रसाद जी, कौशल किशोर जी, गोपाल जी व्यास, ओ.हरिहरनंद जी, मोहन जी भागवत, मु.जु.कुलकर्णी जी, एस.सोमय्या जी, धर्मनारायण जी शर्मा, अशोक कुमार जी बेरी।

संयुक्त अरब अमीरात में बना पहला हिंदू मंदिर : इसे बीएपीएस स्वामीनारायण संप्रदाय द्वारा बनाया गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने 14 फरवरी को उद्घाटन करते समय कहा - यूएई को सिर्फ बुर्ज खलीफा से नहीं, हिंदू मंदिर से भी पहचाना जायेगा।

पाक्षिक
पाथेय कण
फाल्गुन शुक्ल 7 से
चैत्र कृष्ण 6 तक
वि.सं.2080, यु.5125
16-31 मार्च, 2024
वर्ष : 39 अंक : 20

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक
मनोज गर्ग
सम्पादन सहयोगी
हेमलता चतुर्वेदी
प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक
श्याम सिंह
अक्षर संयोजन
कौशल रावत

पाथेय कण संस्थान
के लिए
प्रकाशक एवं मुद्रक:
माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक
क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग,
मालवीय नगर,
जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं
होने पर संपर्क करें-
WhatsApp 79765 82011
Mobile No. 94136 45211
99297 22111

पाथेय कण प्राप्त करने के
लिए सहयोग राशि
Paytm से Mob.No.
7976582011 पर भेजें

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

फिर उगला जहर ...

तमिलनाडु की सत्तारूढ़ पार्टी द्रमुक (डीएमके) के सांसद ए राजा ने भगवान राम और भारत राष्ट्र के प्रति फिर जहर उगला है। गत 3 मार्च को उन्होंने कहा-''हम उस ईश्वर (राम) और भारत माता को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। हम सब राम के शत्रु हैं।'' वे इतने पर ही नहीं रुके। उन्होंने 'जय श्रीराम' के नारे को घृणास्पद बताया। उनका कहना था कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं था, क्योंकि किसी भी राष्ट्र की एक भाषा, एक परंपरा और एक संस्कृति होती है। क्या ए राजा के वक्तव्य में तमिलनाडु का सत्य प्रकट हो रहा था या उनके मन में हिंदू धर्म और संस्कृति के प्रति भरी हुई गंदगी बाहर निकल रही थी? उनके वक्तव्य के कई निहितार्थ हैं।

तमिलनाडु सदियों से हिंदू संस्कृति और परंपरा का गढ़ रहा है। राम कथा और राम के आदर्शों की चर्चा तमिल साहित्य में बार-बार हुई है। कोई ढाई हजार वर्ष पूर्व तमिल में लिखे दो ग्रंथों 'पुरनानूर' और 'अगनानूर' में राम कथा का उल्लेख है। 'शिलप्पदिकारम्' तमिल भाषा का प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसमें कवि इलंगो राम का अपने भाई और पत्नी के साथ वन गमन का उल्लेख करते हैं। अठारह नैतिक ग्रंथों के संकलन 'पदिनेण कील्कणक्कु' में सम्मिलित ग्रंथ 'पलमौलि' में भी कवि श्रीराम का उल्लेख करते हैं।

तमिल के महान कवि-सम्राट कम्बन ने 'रामावतारम' के नाम से रामायण की रचना की है जिसमें 10 हजार 500 पद हैं। यह छ: खंडों में विभाजित है। कवि ने अपनी इस रचना में राम के उत्तम चरित्र को अभिव्यक्त करने के साथ ही जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों को भी सारगर्भित ढंग से प्रस्तुत किया है।

काशी और बाबा विश्वनाथ के प्रति तमिलों की अगाध श्रद्धा सदियों पुरानी है। कोई 2 हजार वर्ष पहले से ही तमिलजनों की काशी यात्रा प्रारंभ हो चुकी थी। ईसा पूर्व लिखे गए तमिल व्याकरण के ग्रंथ 'अगटियम अगस्त्यम' की उत्पत्ति शंकर के डमरू की ध्वनियों से निकली बताई जाती है।

कहते हैं कि प्रथम तमिल संगम (तमिल साहित्यकारों का सम्मेलन) में अगस्त्य, शिव, मुरुगवेल आदि विद्वानों ने भाग लिया था। कपातपुरम के द्वितीय तमिल संगम में उत्तर और दक्षिण के विद्वानों ने सहभागिता की थी।

तमिलनाडु के राजवंश पल्लव राजाओं ने जहां संस्कृत और वैदिक धर्म को संरक्षण दिया वहीं पांड्य राजाओं ने शैव और वैष्णव परंपरा तथा तमिल भाषा पर जोर दिया। 16वीं सदी में मुगल आक्रांताओं के भय से जब काशी यात्रा सुगम नहीं रह गई थी तथा विश्वनाथ मंदिर ध्वंस हो चुका था, तब पांड्यवंश के राजा जटिलवर्मन पराक्रमम ने ताम्रवर्णीय नदी (जिसकी चर्चा रामायण में भी है) के तट पर एक नई काशी का निर्माण किया, जो आज भी 'तेनकाशी' के नाम से जानी जाती है। श्रीकांची शंकराचार्य मठ के प्रबंधक व तीर्थ पुरोहित सुब्रह्मण्यम मणि के अनुसार सातवीं शताब्दी के तमिल लोक साहित्य में काशी की महिमा वाली रचनाएं भरी पड़ी हैं। राष्ट्रकवि और तमिलनाडु के समाज सुधारक सुब्रह्मण्यम भारती ने काशी में रहकर संस्कृत और हिंदी सीखी तथा तमिलनाडु की संस्कृति को समृद्ध किया। तमिल ग्रंथ 'तिरुत्तुंदरपुराणम्' भगवान शिव की पूजा को समर्पित है। 'पेरिया पुराणम्' भी ऐसा ही दूसरा ग्रंथ है।

यदि हम वेशभूषा, रहन-सहन, त्योहारों की चर्चा करें तो सब जानते हैं कि तमिल स्त्रियों की वेशभूषा 'साड़ी' ही है। कांचीपुरम साड़ियां जग प्रसिद्ध हैं। पुरुष शर्ट के साथ सफेद लुंगी या धोती पहनते हैं। पुरुष ललाट पर 'भभूति' लगाते हैं, स्त्रियों का बालों में गजरा, पैरों में पायल, हाथ में चूड़ियाँ, गले में मंगलम या हार, कानों में बालियां, माथे पर बिन्दी, 'मांग' में सिंदूर, ये सब भारत की परंपरा ही हैं। महिलाएं देवी लक्ष्मी के स्वागत में घर के बाहर रंगोली बनाती हैं।

तमिलनाडु का सबसे बड़ा त्योहार 'पोंगल' भारतीय संस्कृति और परंपरा का जीता-जागता उदाहरण है। उत्तर भारत की मकर-संक्रांति के समान ही सूर्य के उत्तरायण होने पर यह त्योहार (सामान्यतया 14-15 जनवरी से चार दिनों तक) मनाया जाता है। घर के बाहर आम के पत्तों की 'बंदनवार' बांधी जाती है। इन्द्र, सूर्य और पृथ्वी की पूजा करते हैं। गाय, बैल आदि के प्रति

शेष पृष्ठ 6 पर ...

संदेशखाली का दरिंदा शाहजहां हुआ गिरफ्तार

स्वाधीन भारत की शर्मनाक घटना

हिंदू महिलाओं के यौन शोषणकर्ता को राजनीतिक संरक्षण?

पश्चिम बंगाल प्रांत के संदेशखाली स्थान पर हिंदू महिलाओं के साथ जो कुछ पिछले वर्षों में होता रहा उसे जानकर कोई भी आक्रोशित हुए बिना नहीं रह पाएगा। यह कैसी स्वाधीनता है जहाँ शाहजहां शेख और उसके गुंडे सरेआम महिलाओं को टीएमसी पार्टी के दफ्तर जबरन ले जाकर रात-रात भर उनका यौन शोषण करते हैं और जब जी भर जाता है तो घर में फेंक जाते हैं। जो भी महिला-लड़की पसंद आ गई उसे गुंडों से उठवा लिया जाता है।

हिन्दू महिलाओं का यौन शोषण

संदेशखाली की सुरेखा मंडल (परिवर्तित नाम) से जब पांचजन्य संवाददाता ने बातचीत करनी चाही तो वह रोने लगी, गला रुंध गया, सिर झुका लिया। बहुत आग्रह करने पर आंसुओं को फटी साड़ी के पल्ले से पोंछ कर बोली, ''संदेशखाली में हम महिलाओं पर क्या बीत रही है, कैसे बताऊँ? क्या हमारा कोई मान-सम्मान नहीं है? टीएमसी नेता शाहजहां शेख और उसके गुंडे जबरन पार्टी कार्यालय ले जाते हैं और गलत काम करते हैं।''

गुनाहगार शाहजहां शेख

22 वर्षीय सुमन (परिवर्तित नाम)बहुत कुछ बताना चाह रही थी, परंतु डर भी रही थी। उसका कहना था कि यदि मैंने मीडिया के सामने कुछ बोला तो वह (शेख शाहजहां) मेरे पूरे परिवार का क्या हाल करेगा, बता नहीं सकती। उसका कहना था, ''लंबे समय से यहां हिंदू महिलाएं अपने को असुरक्षित महसूस करती रही हैं। हर समय डर व खतरा बना रहता है कि कब उसके गुंडे आकर उठा न ले जाएं। वे कभी भी किसी के घर में घुसकर महिलाओं को जबरदस्ती पार्टी दफ्तर ले जाते हैं। फिर रात भर रखते हैं। वहां उनका शारीरिक शोषण होता है जब जी भर जाता है तो छोड़ देते हैं। पुलिस भी हमारा साथ नहीं देती है। पुलिस गुंडों का ही साथ देती है।''

एक अन्य महिला ने बताया कि ये लोग गरीब आदिवासी दलितों की जमीन कब्जा रहे हैं। उनके पोखरों (छोटे तालाब) पर कब्जा जमा लेते हैं। विरोध करने पर घर में आग लगा देते हैं।

संदेशखाली की अनगिनत महिलाओं के साथ वर्षों से यह होता रहा है। टीएमसी नेता शाहजहां शेख, शिबू हाजरा तथा उत्तम सर्कार ने वहां पूरी तरह गुंडाराज कायम कर रखा था।

बता दें कि शाहजहां शेख ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत सीपीएम पार्टी से की थी। 2009 में पाला बदल कर टीएमसी (तृणमूल कांग्रेस) पार्टी में शामिल हो गया। सामाजिक कार्यकर्ता विवेक बताते हैं,'' शेख का प.बंगाल ही नहीं बांग्लादेश में भी बड़ा नेटवर्क है। खूनी आतंक का पर्याय बन चुके शेख पर पुलिस कानूनी कार्रवाई करने का साहस नहीं जुटा पाती। आला अधिकारियों और तृणमूल के बड़े नेताओं ने शेख को संरक्षण दे रखा है।''

ममता बनर्जी का संरक्षण

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस हैवानियत और गुंडाराज के प्रति आंखें मूंद रखी हैं। वे कहती हैं, ''शाहजहां शेख को टारगेट किया जा रहा है। ईडी पहले से ही उसे टारगेट कर रही है। भाजपा के लोग जानबूझकर उसे लक्षित कर रहे हैं, जबकि वह तो एक 'सामाजिक कार्यकर्ता' है।''

बिना कोई जांच कराए ही ममता बनर्जी ने कहा,''घूंघट में प्रदर्शन करने

वाली औरतें संदेशखाली की नहीं हैं, वे बाहरी हैं। भाजपा उन्हें लाई है। यह भाजपा की साजिश है।''

अवैध धंधे व तस्करी

शाहजहां शेख ने बशीर हाट क्षेत्र की हजारों एकड़ जमीन पर अवैध कब्जा कर रखा है तथा उस भूमि को ठेके पर देता है। वह तस्करी तथा कई अवैध धंधों को अंजाम देता रहा है। संदेशखाली के विकास महतो बताते हैं, ''शेख अकेले मछली उत्पादन, लेवी, ईंट भट्टों से ही अवैध कमाई नहीं करता, वह सोने व मादक पदार्थों के साथ ही लड़कियों और महिलाओं की भी तस्करी करता है।''

ईडी अधिकारियों पर हमला

पिछले दिनों ईडी ने प. बंगाल में हुए दस हजार करोड़ के राशन घोटाले में वनमंत्री ज्योतिप्रिया मल्लिक तथा एक कंपनी के मालिक बकीबुर रहमान को गिरफ्तार किया था। उसी घोटाले में संदेशखाली के शाहजहां शेख की संलिप्तता होने से ईडी के अधिकारी संदेशखाली गए थे। वहां शेख के 200 से अधिक गुंडों ने ईडी अधिकारियों पर जानलेवा हमला कर दिया था। स्थानीय पुलिस ने ईडी अधिकारियों को सुरक्षा प्रदान करने की बजाए उन पर सांप्रदायिक तनाव का वातावरण बनाने का आरोप लगा दिया।

> "यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस राज्य की मुख्यमंत्री स्वयं एक महिला हैं, वहां महिलाओं के विरुद्ध हो रहे इन अपराधों पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। अचंभित करने वाली बात यह है कि अपराधी शाहजहां शेख पर कार्रवाई करने की बजाय सरकार उसे बचाने में जुटी है।"
>
>
>
> *-श्री आलोक कुमार, केन्द्रीय कार्याध्यक्ष, विहिप*

मदरसों व रोहिंग्याओं को संरक्षण

प्राप्त जानकारी के अनुसार बशीर हाट क्षेत्र में सैकड़ों मदरसे हैं जहां बांग्लादेश के आतंकी संगठन जेएमबी (जमात-उल-मुजाहिद्दीन ऑफ बांग्लादेश) के मौलवी रोहिंग्याओं को जिहाद के लिए तैयार करते हैं। इन मदरसों को शाहजहां शेख राजनीतिक एवं आर्थिक संरक्षण देता है। ईडी छापे के बाद शाहजहां शेख फरार हो गया था।

भाजपा ने किया विरोध

भारतीय जनता पार्टी ने इस संबंध में ममता बनर्जी सरकार पर जोरदार हमला बोला है। प.बंगाल भाजपा के अध्यक्ष डॉ.सुकांत मजूमदार का इस संबंध में कहना है, ''तालिबान ने जो महिलाओं के साथ किया, ठीक वैसा ही जुल्म यहां हुआ है।'' उनका यहां तक कहना है कि ममता बनर्जी प.बंगाल को बांग्लादेश बनाने के लिए अंदरखाने तैयारी कर रही है। भाजपा द्वारा इस मुद्दे को विधानसभा में उठाए जाने पर उसके 6 विधायकों को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया।

2 मार्च को प.बंगाल के कृष्ण नगर में एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने भी संदेशखाली का जिक्र किया। उन्होंने कहा, ''संदेश खाली की बहनें इंसाफ की गुहार लगाती रहीं, लेकिन टीएमसी की सरकार ने उनकी एक नहीं सुनी।''

महिलाएं उतरी सड़क पर

आखिरकार संदेशखाली की महिलाएं उन पर हो रहे जुल्म के विरुद्ध एक हुई तथा दरिंदे शाहजहां की गिरफ्तारी को लेकर सड़कों पर प्रदर्शन किया। महिलाओं का आंदोलन कई दिनों तक जारी रहा। केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी तथा प.बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने भी संदेशखाली का दौरा किया तथा महिलाओं को न्याय दिलाने का संकल्प जताया।

डॉ.सुकांत मजूमदार (भाजपा प्रदेशाध्यक्ष)

13 फरवरी को कलकत्ता हाईकोर्ट ने इस पर स्वयं ही सुनवाई शुरू की। 26 फरवरी को ममता सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि शाहजहां को ईडी,सीबीआई या पुलिस कोई भी गिरफ्तार कर सकती है।

हाईकोर्ट की फटकार के बाद अंतत: 55 दिनों से फरार शाहजहां शेख को पुलिस ने गिरफ्तार कर गत 29 फरवरी को न्यायालय में पेश किया।

पुलिस का रवैया पक्षपातपूर्ण

प.बंगाल की पुलिस का रवैया शाहजहां को बचाने का रहा है। इसी कारण से शाहजहां के विरुद्ध पुलिस ने बलात्कार जमीन हड़पने आदि से संबंधित धाराएं नहीं लगाई हैं और उसे ईडी पर हमला कराने संबंधी धाराओं में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के रवैए पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने सख्त टिप्पणी की है। न्यायालय ने कहा-बंगाल पुलिस ने पक्षपातपूर्ण कार्रवाई की है। आरोपियों को बचाने के लिए जांच में देरी कर रही है। हाईकोर्ट ने मामले को सीबीआई को सौंप दिया है।

शाहजहां की सम्पत्ति कुर्क की गई

इस बीच ईडी ने शाहजहां शेख की 12 करोड़ 78 लाख रुपयों की संपत्ति कुर्क कर दी है। देश में कई स्थानों पर महिला व अन्य संगठनों ने प्रदर्शन कर शाहजहां और उसके गुंडों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। खूंखार दरिंदे शेख की गिरफ्तारी होने पर

संदेशखाली में महिलाओं ने अवश्य थोड़ी राहत की सांस ली होगी। परंतु अभी भी शाहजहां के कई गुंडे खुले घूम रहे हैं।

शाहजहां शेख भले ही गिरफ्तार हो गया हो, मूल प्रश्न तो फिर भी खड़ा है कि देश की स्वाधीनता क्या शाहजहां जैसे गुंडों को संरक्षण देने के लिए मिली थी क्या? स्वाधीनता के 75 वर्षों बाद भी भारत के किसी क्षेत्र में हिंदू महिलाओं की अस्मिता सुरक्षित नहीं ? क्या महिलाओं की इज्जत-मान के साथ खेलने वाले दरिंदे को टीएमसी जैसी पार्टी की राज्य सरकारें संरक्षण प्रदान करती रहेंगी? ■

कट्टरपंथियों का केंद्र बन चुके हैं 14 विधानसभा क्षेत्र

संदेशखाली राज्य के उन 14 विधानसभा क्षेत्रों में शामिल है, जो भारत-बांग्लादेश की सीमा से सटे हुए हैं। ये सभी विधानसभा क्षेत्र टीएमसी समर्थित गुंडों और जिहादियों का केन्द्र बन चुके हैं। इन सीमावर्ती विधानसभा क्षेत्रों में बांग्लादेशी घुसपैठ उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है। कुछ समय पहले तक संदेशखाली में मुस्लिम जनसंख्या न के बराबर थी, लेकिन रोहिंग्याओं की घुसपैठ के चलते यहां जनसांख्यिकी परिवर्तन बड़ी तेजी से हो रहा है। आज जो कुछ संदेशखाली में घट रहा है, वह नया नहीं है। साल 2000 में दक्षिण 24 परगना की बसंती विधान सभा में एक अनुसूचित जाति की महिला का जिहादियों ने सामूहिक बलात्कार किया था। जब इस घटना के खिलाफ रा.स्व.संघ के चार स्वयंसेवकों ने आवाज उठायी तो बलात्कारियों ने उन कार्यकर्ताओं को मौत के घाट उतार दिया।

संपादकीय शेष... आभार प्रकट करने के लिए गाय के पैर और ललाट का स्पर्श करते हैं। आरती की जाती है। भगवान गणेश और देवी पार्वती की पूजा का विधान भी है। पोंगल के अंतिम दिन महिलाएं भाई की समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना करती हैं। पक्षियों को खाने के लिए पत्तों पर कुछ खाद्य पदार्थ रखे जाते हैं। क्या ये सब हिंदू परंपराएं नहीं हैं?

तमिलनाडु को 'मंदिरों का प्रदेश' कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। शायद ही कोई शहर-कस्बा या गांव होगा जहां शिव, मुरुगन (शिवजी के पुत्र कार्तिकेय), अयप्पा, सुब्रह्मण्यम (कार्तिकेय) या किसी अन्य देवता का कोई मंदिर न हो। 9 हजार 300 से ज्यादा बड़े मंदिर सरकार के 'हिंदू धार्मिक और सेवार्थ विभाग' के अंतर्गत पंजीकृत हैं। दुर्भाग्य है कि इनका प्रशासनिक नियंत्रण एक ऐसी सरकार के हाथ में है जो नास्तिक और हिंदू विरोधी है।

कांचीपुरम, चेटीनाद, चिदाम्बरम आदि शहर तो 'मंदिरों के शहर' कहे जाते हैं। तंजावुर का प्रसिद्ध मंदिर 'ब्रिहादेश्वरा' व 'आर्यावटेश्वरा' शिव भगवान के मंदिर हैं जहां 'नंदी हॉल' और 'नंदी मंडपम्' बनाए गए हैं। अरियालूर जिले के ब्रिहादेश्वरा मंदिर में शिव की मुख्य प्रतिमा के साथ ही दुर्गा, सूर्य व विष्णु की मूर्तियां भी विराजमान हैं। सभी शिव मंदिरों में 'नंदी' की प्रतिमा अवश्य रहती है। मदुरई में स्थित भव्य मीनाक्षी अम्मा मंदिर देवी पार्वती को समर्पित है। यह पूरे भारत में फैले शक्तिपीठों में से एक है। मान्यता है कि यहां देवी सती की नाभि गिरी थी।

स्पष्ट है कि तमिलनाडु प्रदेश का हर कोना हिंदू या कहें कि सनातन धर्म की परंपरा और संस्कृति से रचा बसा है। यह भारत की विशेषता है कि भौगोलिक तथा जलवायु के अनुसार अपनी वेशभूषा, खानपान, रीति-रिवाज अपनाने की स्वतंत्रता हमेशा से रही है, परंतु इस विविधता के बावजूद एक आंतरिक एकता के दर्शन होते हैं।

जहां तक अलग भाषा का प्रश्न है, 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 19 हजार 569 भाषाएं और बोलियां हैं। इनमें से 121 को भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है।

तमिलनाडु के महाकवि सुब्रह्मयम भारती की एक प्रसिद्ध कविता का शीर्षक है-' यह है भारत देश हमारा' उन्होंने भारत माता की वंदना में लिखा-'तुम स्वयं ज्योति हो माँ, शौर्य स्वरूपिणी हो तुम माँ, दु:ख और कपट की संहारिका हो माँ, तुम्हारी अनुकम्पा का प्रार्थी हूँ मैं माँ।' (तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)। एक और कविता है-' आओ गाऐं वन्देमातरम्, भारत माँ की वंदना करें हम' (हिंदी अनुवाद)। इसके बावजूद ए राजा कहते हैं, ''हम भारत माता को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।'' तो उनके मुख से उनकी स्वयं में भरी दुर्भावना व गंदगी ही निकल रही है।

प्रश्न यह भी उठेगा कि फिर तमिलनाडु की जनता ए राजा जैसे देशद्रोही व धर्मद्रोहियों को सत्तासीन कैसे कर रही है? वस्तुत: भारत में युद्ध राजाओं में होता था, प्रजा उससे अप्रभावित रहती थी। 'कोउ नृप होउ, हमहि का हानी' में विश्वास करने वाली प्रजा राजा बदलने पर भी अपने मत-पंथ के अनुसार पूजा-पाठ, रहन-सहन, खान-पान आदि की परंपरा को जारी रखे रहती है। दुर्भाग्य से हिंदू समाज में आई कुप्रथा 'छुआछूत' तथा 'ऊँच-नीच' से तमिलनाडु भी प्रभावित रहा। इसी को आधार बनाकर द्रमुक जैसी नास्तिक और हिंदू विरोधी पार्टी सत्ता में आ गई है। जिस दिन वहां का हिंदू अपने स्वाभिमान के प्रति सामूहिक रूप से जाग्रत और संगठित होगा, परिस्थितियां बदल जाएंगी। संघ यही कर रहा है।

- रामस्वरूप अग्रवाल

श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह

एक नए युग का ऐतिहासिक शुभारम्भ

■ रामलाल
अ.भा.संपर्क प्रमुख, रा.स्वं.संघ

22 जनवरी 2024 को प्राचीन नगरी अयोध्या में एकता, श्रद्धा, भक्ति और समरसता का अविस्मरणीय संगम देखा गया। वहां देश के प्रत्येक कोने से, भिन्न-भिन्न पृष्ठ भूमियों से, सहस्त्रों राम भक्त भव्य राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बनने के लिए एकत्र हुए। श्री रामलला के आगमन के नाद से भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक नवोत्साह की लहर का संचार हुआ।

अभूतपूर्व

भारत के इतिहास में इस तरह का भव्य आयोजन कदाचित ही हुआ होगा, जिसमें सूक्ष्म स्तरीय योजना एवं वृहद् स्तरीय समायोजन का अनोखा मेल देखने को मिला। अयोध्या में भारत और सनातन सभ्यता की प्रत्येक ध्वनि, प्रत्येक भावना और प्रत्येक परम्परा को प्रभु श्रीराम के छत्र में प्रतिछाया मिली। लक्षद्वीप और अंडमान के एकांत द्वीपों से लद्दाख के सुदूर पर्वतों तक, मिजोरम एवं नागभूमि के हरित वनों से लेकर मरुभूमि की रेत तक, भारत के 28 राज्य एवं 8 केंद्र शासित प्रदेश इस महा-आयोजन के साक्षी बने और भारत की सभी भाषाओं ने कहा कि 'राम सभी के हैं।'

सितम्बर, 2023 से ही निमंत्रितों की सूची बनाने से लेकर उनको बुलाने की व्यवस्था का चिंतन प्रारम्भ हो गया था। सभी को निमंत्रण देने का क्रम डिजिटल पत्राचार से प्रारम्भ हुआ, जिसके बाद सभी निमंत्रितों को राष्ट्र के सुदूर क्षेत्रों में जाकर भी व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दिए गए। अंततः सभी निमंत्रितों को एक व्यक्तिगत कोड दिया गया। कार्यक्रम का स्वरूप पूर्णतया: धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रखा गया। इस हेतु सभी राष्ट्रीय और प्रांतीय दलों के राष्ट्रीय अध्यक्षों और गृह प्रदेश के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त किसी केंद्रीय मंत्री अथवा मुख्य मंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया। उस दिन आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों में यह एक चर्चा का विषय था ।

सब जाति, वर्ग, संप्रदायों को निमंत्रण

आमंत्रित महानुभावों में 10 रुपए से लेकर करोड़ों तक का दान करने वाले सभी दान-दाता वर्गों का प्रतिनिधित्व था, राष्ट्र और सनातन सभ्यता के विभिन्न उद्गम स्थलों से निकलने वाली 131 प्रमुख और 36 जनजातीय नवीन एवं प्राचीन धार्मिक परम्पराओं का प्रतिनिधित्व था। इनमें सभी अखाड़े, कबीर पंथी, रैदासी, निरंकारी, नामधारी, निहंग, आर्य समाज, सिंधी, निम्बार्क, पारसी धर्मगुरु, बौद्ध, लिंगायत, रामकृष्ण मिशन, सत्राधिकर, जैन, बंजारा समाज, मैतेई, चकमा, गोरखा, खासी, रामनामी आदि प्रमुख परम्पराएँ सम्मिलित थी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, घुमंतू समाज (Nomad Tribes) के प्रमुख जनों का भी प्रतिनिधित्व था। विभिन्न मत-पंथ जैसे इस्लाम, ईसाई, पारसी का भी यहाँ प्रतिनिधित्व था।

सभी संबंधित लोग बुलाए गए

1949 में रामलला के पक्ष में निर्णय लेने वाले जिला न्यायाधीश श्री नय्यर के परिवार के साथ साथ तत्कालीन Duty Constable अब्दुल बरकत, जिन्होंने गवाही दी थी, उनके परिवार को भी आमंत्रित किया गया था। रामलला के विरुद्ध मुकदमा लड़ने वाले परिवार के साथ तत्कालीन अधिकारियों के परिवारों को भी निमंत्रण दिया गया था।

रामजन्मभूमि आंदोलन का नेतृत्व करने वाले और इस आंदोलन में बलिदान हुए भक्तों के परिवार के सदस्य, रामजन्मभूमि की न्यायिक प्रक्रिया में सहभागी अधिवक्ता गण भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए। भारत की माननीया राष्ट्रपति और माननीय उप-राष्ट्रपति जी के साथ पूर्व राष्ट्रपति एवं पूर्व प्रधानमंत्री भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित थे।

सभी वर्गों के लोग थे वहां

भारत की सुरक्षा में तत्पर तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सेनाध्यक्ष और परमवीर चक्र विजेता भी यहाँ थे और भारत को चंद्रमा तक ले जाने वाले इसरो के वैज्ञानिकों से लेकर भारतीय कोविड-वैक्सीन बनाने वाले वैज्ञानिक भी यहाँ थे। उच्चतम न्यायालय के तीन पूर्व मुख्य न्यायाधीश सहित अनेक पूर्व न्यायाधीश, सेवानिवृत्त प्रशासनिक पुलिस एवं अन्य अधिकारी, विभिन्न देशों में रहे भारत के राजदूतों से लेकर बुद्धिजीवी, शिक्षाविद्, नोबेल पुरस्कार, भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्मश्री और मैग्सेसे पुरस्कार के साथ साथ साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित महानुभाव भी सम्मिलित हुए। प्रख्यात अधिवक्ता, चिकित्सक, सीए, समाचार पत्रों और टीवी चैनल्स के संचालक/सम्पादक, प्रख्यात सोशल मीडिया इंफ्ल्यूएंसर्स आदि के साथ साथ देश के बड़े औद्योगिक परिवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

खिलाड़ी, कलाकार, फिल्म जगत के प्रमुख भी आए

भारत के प्रमुख राज परिवारों के सदस्यों से लेकर खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ी; चित्रकारी, शिल्पकारी, गायन , लेखन - साहित्य, वादन, नृत्यकला आदि ललित कलाओं के कलाकार, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, बंगाली, ओडिया, असमिया, भोजपुरी, पंजाबी एवं हरियाणवी फिल्म उद्योग की अनेक हस्तियाँ भी इस आयोजन में सम्मिलित हुईं।

प्रभु श्री राम के घर में सभी जातियाँ, सभी वर्ग, सभी क्षेत्र, एक समान थे, एक साथ थे। सभी ने अपने औहदे, अपनी सामाजिक-आर्थिक महत्ता से ऊपर उठकर अयोध्या के सादगी पूर्ण आतिथ्य को सहृदय स्वीकार किया। यह ऐसा कार्यक्रम था जहां इस स्तर के व्यक्ति 4-5 घंटों तक सामान्य कुर्सियों पर बैठे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री देवेगौड़ा जी वहाँ 4 घंटे व्हील चेयर पर बैठे। ना तो वहाँ किसी के सहयोगी थे, ना ही सुरक्षाकर्मी ।

53 देशों के प्रतिनिधि, सभी मत-पंथ, सभी क्षेत्रों से यजमान

53 देशों से आये 150 प्रतिनिधि इस समारोह में सम्मिलित हुए। मुख्य पूजा में 15 यजमान बैठे थे, जिनमें सभी जाति वर्गों (सिख, जैन, नवबौद्ध, निषाद समाज, वाल्मीकि समाज, जनजाति समाज, घुमंतू जातियाँ आदि) और भारत की सभी दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उत्तर-पूर्व) से आए व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व था। इन सभी की मंच पर ही बैठने की व्यवस्था थी।

किसान, मजदूर, सामाजिक संगठन

देश का पोषण एवं विकास करने वाले किसान और मजदूर बंधुओं के साथ सहकारिता और ग्राहक संगठनों के प्रतिनिधि भी यहाँ उपस्थित थे। एल एंड टी व टाटा समूह के अधिकारी, अभियंता और श्रमिक यहाँ उपस्थित थे। जिन श्रमिकों ने प्रभु श्रीराम के मंदिर के निर्माण को आकार दिया, प्रधानमंत्री जी ने स्वयं उन पर पुष्प वर्षा करके उनका अभिनंदन किया। संघ और विश्व हिंदू परिषद के अनेक प्रबंधक कार्यकर्ताओं से लेकर संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री रामलला प्रतिष्ठित हुए हैं तो सभी देवी-देवताओं ने उपस्थित होकर अपना आशीर्वाद अवश्य ही दिया होगा।

व्यवस्था में संघ के कार्यकर्ता

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के आग्रह पर जहां विश्व हिंदू परिषद के सैकड़ों कार्यकर्ता दिन-रात लगे थे, वहीं ट्रस्ट के आग्रह पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व अन्य कई स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों के अनेक कार्यकर्ता इस आयोजन की व्यवस्था में थे। उनके प्रबंधन के अनुभव का लाभ सूक्ष्म दृष्टि से व्यवस्था के चिंतन में हुआ। जिसका अनुभव वहाँ आए प्रत्येक रामभक्त को हो रहा था। चाहे स्वागत हो, चाहे बैटरी चालित वाहन, चाहे व्हील चेयर की व्यवस्था हो, चाहे पदवेश उतारने की व्यवस्था। सभी के जूते स्वयंसेवी संस्था के प्रमुख लोग अपने हाथों से उतार कर रख रहे थे और लौटने पर पहना भी रहे थे।

लघुशंकालयों के बाहर भी चप्पलों की व्यवस्था थी। सभी कुछ सूक्ष्म चिंतन करके तैयार किया गया था।

नई अयोध्या

अयोध्या के नागरिक और प्रशासन ट्रस्ट के साथ समन्वय करते हुए अयोध्या को संवारने में लग गए। अयोध्यावासी सामान्य जन के लिए यह एक कौतूहल का विषय था कि कैसे 4 माह में अयोध्या नगरी का स्वरूप सहसा परिवर्तित हो गया।

सुरक्षा व्यवस्था,स्वागत, आवास आदि

भक्त-जन, पूज्य साधु संत और अनेक महानुभावों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय था, जो कि स्थानीय प्रशासन, पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के बिना सम्भव नहीं था ।उत्तर प्रदेश और अयोध्या पुलिस के सहयोग पूर्ण व मित्रवत् व्यवहार से सभी प्रभावित हुए। उसी का परिणाम था कि इतना बड़ा कार्य सरलता से निर्विघ्न व यशश्विता के साथ सम्पन्न हुआ। सभी के साथ प्रभु श्रीराम का आशीर्वाद तो था ही।

तीन दिनों में अयोध्या में बिना किसी राजनैतिक या व्यावसायिक आयोजन के 71 निजी विमान गतिमान हुए ।लखनऊ तथा अयोध्या के विमानतल एवं लखनऊ, अयोध्या, काशी, गोरखपुर, गोंडा, सुल्तानपुर, प्रयागराज आदि रेल-स्टेशनों पर केसरिया पटके के साथ स्वागत एवं यातायात की पूर्ण व्यवस्था की गई। विभिन्न उपस्थित लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, सभी के लिए आवास व्यवस्था सावधानीपूर्वक तैयार की गई थी। टेंट सिटी, होटल, आश्रम, धर्मशाला सहित कुछ विद्यालयों तथा 200 स्थानीय परिवारों में रुकने की व्यवस्था की गयी थी। सम्पूर्ण अयोध्या 'राम आएँगे' गीत की ध्वनि से गुंजायमान थी।

अयोध्या की गलियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद देर रात्रि तक सभी ने लिया।

प्रभु के दरबार में सब थे समान

भारत का इतिहास साक्षी है कि यह स्वयं में ऐसा एक ही कार्यक्रम था जहां इस स्तर के व्यक्ति 4-5 घंटों तक सामान्य कुर्सियों पर बैठे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री देवेगौड़ा जी वहाँ 4 घंटे व्हील चेयर पर बैठे। ना तो वहाँ किसी के सहयोगी थे, ना ही सुरक्षाकर्मी। प्रसाद स्वरूप सभी को जल सेवा एवं जलपान अपनी कुर्सियों पर ही दिया गया, प्रभु श्रीराम के घर में सभी जातियाँ, सभी वर्ग, सभी क्षेत्र, एक समान थे, एक साथ थे। सभी ने अपने औहदे, अपनी सामाजिक-आर्थिक महत्ता से ऊपर उठकर अयोध्या के सादगी पूर्ण आतिथ्य को सहृदय स्वीकार किया।

> अयोध्या के इस दैवीय आयोजन ने जाति, वर्ग, भाषा, प्रांत, मत-पंथ की सीमाओं को पार करते हुए, परंपरा से ओत-प्रोत, फिर भी प्रगति को गले लगाते हुए, एक राष्ट्र की सामूहिक चेतना का जागरण किया। यह आयोजन; एकता, अखंडता, समरसता और श्रद्धा के 'रामोत्सव' के रूप में युगों-युगों तक जीवित रहेगा।

जो अयोध्या नहीं आ पाए, उन्होंने स्थानीय मंदिरों में पूजन किया, रात्रि में दीपोत्सव मनाया। सभी का मन एवं आत्मा उस दिन अयोध्या में ही थे। श्री रामलला के स्वागत हेतु अयोध्या नगरी एवं मंदिर परिसर को भी असंख्य क्विंटल पुष्पों से सुसज्जित किया गया, भारत के सभी प्रांतों के परम्परागत वाद्य-वादक, 30 से अधिक कलाकारों ने वातावरण को राम -गीतों से संगीतमय कर दिया और आरती के समय सहस्त्रों पीतल की घंटियों से मंदिर परिसर गुंजायमान हो उठा। रामलला के अवतरण के साथ ही, हेलिकॉप्टर द्वारा मंदिर परिसर पर की गई पुष्प वर्षा से लग रहा था मानो सम्पूर्ण देवलोक प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा कर रहा है।

मात्र समारोह नहीं था यह अवसर

यह आयोजन एक समारोह मात्र के स्तर से ऊपर उठ गया था, यह एक दैवीय अनुभूति, एक आध्यात्मिक यात्रा में परिवर्तित हो चुका था। लोग भाव विभोर थे, वातावरण दिव्य लोक के समान एक अलौकिक आभा से आच्छादित हो गया। कुछ श्रद्धालुओं की आँखो में आँसू थे, कुछ नृत्य- लीन थे। कोई स्वर्ग की अनुभूति कर रहा था, कोई त्रेता युग की। सभी के लिए श्रीराम पुन: अयोध्या लौट रहे थे। अगले दिन तो प्रात: 3 बजे से ही श्रद्धालुओं ने श्री रामलला के दर्शन हेतु पंक्ति-बद्ध होना प्रारम्भ कर दिया। 23 जनवरी को लगभग 5 लाख लोगों ने उत्साह और पूर्ण अनुशासन के साथ श्री रामलला के दिव्य दर्शन किए।

राष्ट्र की सामूहिक चेतना का जागरण

अयोध्या के इस दैवीय आयोजन ने जाति, वर्ग, भाषा, प्रांत, मत-पंथ की सीमाओं को पार करते हुए, परंपरा से ओत-प्रोत, फिर भी प्रगति को गले लगाते हुए, एक राष्ट्र की सामूहिक चेतना का जागरण किया। प्रभु श्रीराम की चिर-विरासत का एक प्रमाण, जो विश्व भर में करोड़ों लोगों को प्रेरित और एकजुट करता है, यह आयोजन एकता, अखंडता, समरसता और श्रद्धा के 'रामोत्सव' के रूप में युगों-युगों तक जीवित रहेगा।

अब समय आ गया है कि हम प्रभु श्रीराम का स्मरण कर, भारत को सुखी, संपन्न, स्वस्थ, समर्थ और सम्मानित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प लें। भारत को 'विश्व-गुरु' के रूप में स्थापित करें। ■

संघ को समझने के लिए दिमाग के साथ दिल की जरूरत : होसबाले

डॉ. हेडगेवार थे प्रतिबद्ध राष्ट्रनायक : न्यायमूर्ति अब्दुल नजीर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने कहा है कि डॉ. हेडगेवार ने जिस विचारधारा से संघ खड़ा किया, आज दुनिया के अनेक संस्थान उसका अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संघ को समझने के लिए संघ को दूर से नहीं बल्कि नजदीक से देखिए। संघ को समझने के लिए व्यक्ति को दिमाग के साथ दिल की भी जरूरत पड़ती है। इसके कार्यकर्ता राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के साथ कार्य करते हैं।

होसबाले जी ने दिल्ली में सुरुचि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित डॉ. हेडगेवार की जीवनी 'मैन ऑफ द मिलेनिया' का विमोचन करते हुए कहा कि संघ के संस्थापक डॉ.हेडगेवार एक समग्र राष्ट्रीय सोच वाले व्यक्ति थे। राष्ट्रभक्ति की भावना उनके अंदर जन्मजात थी। आज की पीढ़ी उनकी देशभक्ति और राष्ट्रीय विचारों से प्रेरणा लेती है।

पुस्तक की चर्चा करते हुए होसबाले जी ने कहा कि डॉक्टर साहब के सम्पूर्ण जीवन और उनकी कार्य शैली को समझने के लिए यह पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि डॉक्टर साहब ने संघ में 'मैं' नहीं 'हम' की परंपरा का विकास किया और एक ऐसी टीम खड़ी की जिसकी पहली प्राथमिकता और कार्य शैली में समाज उत्थान, राष्ट्रीय स्वाभिमान और व्यक्ति निर्माण शामिल है।

संसद भवन के बालयोगी सभागार में सम्पन्न इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आंध्र प्रदेश के राज्यपाल तथा सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व जज न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर ने कहा कि डॉ.हेडगेवार जी ने जिस संगठन की नींव रखी थी, आज सारी दुनिया उनके कामों से प्रेरणा लेती है।

श्री अब्दुल नजीर ने डॉ. हेडगेवार को ऐसा प्रतिबद्ध राष्ट्रवादी बताया, जिसने देश की परंपरा और संस्कृति की रक्षा के लिए अपनी चिकित्सा शिक्षा तक को कुर्बान कर दिया। उन्होंने कहा कि हेडगेवार जी ने जीवन पर्यन्त स्वहित की जगह राष्ट्रहित को तहजीह दी।

खेरवाड़ा

वनवासी कल्याण परिषद के छात्रावास पहुँचे अभिनेता अक्षय कुमार, आरती में हुए शामिल

बालिका छात्रावास के लिए कही आर्थिक सहयोग देने की बात

बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार गत 6 मार्च की सुबह 8:30 बजे उदयपुर शहर से 90 किमी दूर वनवासी-जनजातीय क्षेत्र खेरवाड़ा पहुँचे। वहां वे राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद द्वारा संचालित छात्रावास के बच्चों से मिले। वहां उन्होंने बालिका छात्रावास के लिए अधिकतम आर्थिक सहयोग देने की बात कही।

बता दें कि अक्षय कुमार के पिता श्री हरिओम के नाम पर यह छात्रावास संचालित है। जिसके लिए उन्होंने पहले एक करोड़ रुपए दिए थे। इसी को देखने अक्षय कुमार खेरवाड़ा पहुँचे थे। उन्होंने छात्रावास में रहने वाले जनजातीय बच्चों के साथ खूब बातें की। अक्षय कुमार छात्रावास में होने वाली आरती 'ओम जय जगदीश हरे' में भी शामिल हुए। उनके साथ राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद् के उपाध्यक्ष श्री जगदीश जोशी व जनजाति सुरक्षा मंच के प्रदेश संयोजक लालूराम सहित अन्य लोग भी उपस्थित थे।

अक्षय कुमार अपनी आगामी फिल्म की शूटिंग के लिए उदयपुर आए हुए थे।

भारतीय किसान संघ की अ.भा.प्रतिनिधि सभा

राष्ट्र हित-किसान हित हमारी नीति

14 आयामों पर विशेष जोर

- लागत आधार पर लाभकारी मूल्य किसानों को मिले।
- कृषि आदानों (साधनों) पर जीएसटी समाप्त की जाए।
- किसान सम्मान निधि में पर्याप्त बढ़ोत्तरी की जाए।
- जैविक कृषि को प्राथमिकता व जीएम फसलें प्रतिबंधित करें।
- मंडी, बाजार में किसानों का शोषण रोकने की व्यवस्था हो।

ये कुछ सुझाव थे जो पिछले दिनों भारतीय किसान संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा द्वारा किसानों की बेहतरी के लिए दिए गए। तीन दिवसीय यह बैठक पिछले दिनों 23,24 व 25 फरवरी को किशनगढ़ (अजमेर) में सम्पन्न हुई।

चौदह आयामों पर विशेष जोर

किसान संघ द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्य को बढ़ाने की दृष्टि से गठित 14 आयामों पर विशेष जोर दिया गया। जिनमें युवा, रोजगार, प्रचार, महिला, गन्ना, जनजाति, बीज, एफपीओ, जल, हिमालयन, व्यापार, जैविक, नारियल तथा ऊर्जा आयामों के माध्यम से ग्राम समिति तक पहुँच बढ़ाने की कार्य योजना पर विशेष जोर दिया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बद्रीनारायण चौधरी ने बताया कि बैठक में मणिपुर, जम्मू-कश्मीर, केरल, उड़ीसा, सिक्किम, महाराष्ट्र, पंजाब, गोवा, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, झारखण्ड सहित देशभर के 35 से अधिक प्रांतों के लगभग 1500 प्रतिनिधि गण सम्मिलित हुए। देशभर में एक लाख ग्राम समितियों का गठन कर एक करोड़ सदस्य बनाने के लक्ष्य के अंतर्गत 60 लाख सदस्य किसान संघ के बन चुके हैं।

तीन दिन तक चली बैठक को किसान संघ के महामंत्री श्री मोहिनी मोहन मिश्र, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री दिनेश कुलकर्णी, संघ के अ.भा.संपर्क प्रमुख श्री रामलाल तथा किसान संघ की अ.भा. महिला संयोजिका श्रीमती मंजू दीक्षित सहित अन्य पदाधिकारियों ने सम्बोधित किया।

सेवा भारती का सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

व्यावसायिक स्तर की सिलाई का प्रशिक्षण देने के लिए सांगानेर में सेवा भारती समिति द्वारा एक केन्द्र आरंभ किया गया है। गत 1 मार्च को केन्द्र का उद्घाटन करते हुए जयपुर प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल ने देशभर में सामूहिक प्रयत्नों से चल रहे स्वावलंबी भारत अभियान की चर्चा की। उन्होंने व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना सच्ची सेवा का पर्याय बताया। विभाग संघचालक डॉ.रामकरण शर्मा इस अवसर पर उपस्थित थे।

अजमेर में धर्मांतरण केन्द्र पर चला बुलडोजर

धर्मांतरण कराने वालों को न्यायालय ने नहीं दी राहत

अजमेर जिले के कई ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय से हिन्दुओं को मतांतरित कर ईसाई बनाने के केन्द्र चलने की जानकारी सामने आई है। धर्मांतरण के ऐसे ही एक केन्द्र हाथी खेड़ा गांव स्थित जॉनसिंह रावत के एक मकान को अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया गया। जॉनसिंह ने सरकारी जमीन पर कब्जा कर दो मकान बनाए थे। इनमें धर्मांतरण की अवैध गतिविधि का संचालन हो रहा था। जॉनसिंह ने स्थानीय सिविल न्यायाधीश के न्यायालय में वाद प्रस्तुत कर उसके मकानों पर बुलडोजर की कार्रवाई पर रोक लगाने की प्रार्थना की थी। विगत 2 मार्च को न्यायालय द्वारा कोई राहत न देते हुए उसके प्रार्थना पत्र को रद्द कर दिया गया। अब उसके दूसरे मकान पर भी बुलडोजर चलने का रास्ता साफ हो गया है। विश्व हिंदू परिषद का आरोप है कि जिले के कई स्थानों पर सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा करते हुए धर्मांतरण के केन्द्र बनाए गए हैं जहाँ जबरन धर्मांतरण करवाया जा रहा है। बताया जा रहा है कि पिछले 15 वर्षों में 10 हजार से ज्यादा हिंदू परिवारों को ईसाई बनाया गया है।

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

विश्व की समस्याओं का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित - प्रो. सलूजा

एबीआरएसएम (अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ) द्वारा 'वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन विगत 25-26 फरवरी को नई दिल्ली के डॉ. आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केन्द्र में सम्पन्न हुआ। 26 फरवरी को हुए सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् प्रो.चाँद किरण सलूजा ने कहा कि विश्व के सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों का समाधान प्राचीन भारतीय सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने का सही तरीका है।

चौधरी बंशीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी के कुलपति और समापन समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो. आरके मित्तल ने कहा कि वर्तमान गतिशील युग में समग्र विकास के लिए निरंतर तकनीकी उन्नयन और पंचकोसी शिक्षा से बेरोजगारी की वृद्धि को बदला जा सकता है जो युवाओं को नौकरी मांगने वालों से नौकरी देने वाला बनाएगी।

इस अवसर पर दिल्ली कौशल और उद्यमिता विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. अशोक के नागावत ने कहा कि विश्व ने प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारतीय योगदान को मान्यता दी है।

इससे पूर्व 25 फरवरी को सम्पन्न उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव एवं विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने दीप प्रज्जवलन कर सम्मेलन का उद्घाटन किया। श्री भूपेन्द्र यादव ने जहां भारत को विश्व गुरु बनाने के मार्ग में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित किया, वहीं प्रो.योगेश सिंह ने कहा कि हम वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती अर्थ व्यवस्थाओं में से एक के रूप में भारत के उल्लेखनीय उद्भव को देख रहे हैं।

एबीआरएसएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जेपी सिंघल ने भारत में शिक्षा क्षेत्र में संगठनात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा में निवेश पर जोर दिया।

सम्मेलन में विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, कॉलेजों एवं विद्यालयों के 700 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। भारत के पुनरुत्थान के बहुआयामी पहलुओं पर आधारित शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर सम्मेलन में पूरे समय उपस्थित रहे।

सर्वजातीय विवाह में सात जोड़े बंधे परिणय सूत्र में

***कोटपूतली** में 24 फरवरी को सेवा भारती समिति द्वारा आयोजित श्रीराम जानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन (पंचम) में मेघवाल,धानका, बलाई, बावरिया, सिंगीवाल (घुमंतू) पांच जातियों के सात जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।*

शिक्षिका ने लाखों के फर्नीचर का किया दान

महावीर स्वामी का 2550वां निर्वाण वर्ष

हमने सत्य की खोज अपने भीतर की, तब उस तक पहुंचे : सरसंघचालक

हमारी जड़ें हिन्दुत्व में : महासाध्वी प्रीति रत्ना

गत 12 फरवरी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ,नई दिल्ली की ओर से भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में विज्ञान भवन में 'कल्याणक महोत्सव' का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने कहा हम नित्य एकात्मता स्त्रोत गाते हैं, जिसमें कहा गया है कि वेद, पुराण, सभी उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, जैन ग्रंथ, बौद्ध, त्रिपिटक तथा गुरुग्रन्थ साहिब में संकलित संतों की वाणी सब भारत की श्रेष्ठ ज्ञान निधि है।

उन्होंने कहा कि विश्व में शाश्वत सुख देने वाला सत्य सबको चाहिए था लेकिन दुनिया और भारत में यह अंतर रहा कि बाहर की खोज करके दुनिया रुक गई और हमने बाहर की खोज के बाद अंदर खोजना प्रारंभ किया और उस सत्य तक पहुंच गए। उन्होंने कहा कि सत्य एक है, लेकिन देखने वालों की दृष्टि अलग-अलग है। एक ही वस्तु और स्थिति का वर्णन अलग-अलग है। महावीर स्वामी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

महावीर को मानना सरल है। महावीर ने अहिंसा का रास्ता दिखाया। उनका मानना था कि लड़ने की भाषा वही बोलते हैं, जिनमें डर होता है। जो महावीर होता है, वह सुलह की बात करता है। इसलिए हमें महावीर जी की तपस्या,उपदेश व विचार को अपनाना चाहिए। महोत्सव में आचार्य सुनील सागर जी महाराज ने कहा सत्य,अहिंसा और सदाचार हमारे देश में 24 तीर्थंकरों तथा राम,कृष्ण, बुद्ध और महावीर से आए। इनके संरक्षण का काम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया।

महासाध्वी प्रीति रत्ना जी ने कहा, हम जैन हैं और हमारी जड़ हिन्दुत्व में ही है। हिंसा से जिसका मन दु:खी होता है,वह हिंदू होता है। संघ द्वारा आयोजित इस महोत्सव को जैन पंथ के चारों संप्रदायों के संतों का आशीर्वाद मिला।

भारतीय दृष्टिकोण से लिखा इतिहास जनमानस तक पहुंचाने की आवश्यकता

इतिहास संकलन समिति का क्षेत्रीय अधिवेशन

इतिहास संकलन समिति राजस्थान क्षेत्र के अधिवेशन में इस बात को रेखांकित किया गया कि जनमानस तक भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया इतिहास पहुँचाया जाए। इस संबंध में अधिवेशन में आए इतिहासकारों को संबोधित करते हुए समिति के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बालमुकुंद पाण्डे ने कहा कि यूरोपीय दृष्टि वाले इतिहासकारों का लिखा इतिहास पढ़ेंगे तो उसमें भगत सिंह आतंकवादी नजर आएंगे, जबकि भारतीय दृष्टिकोण में भगत सिंह भारत माता की स्वाधीनता के लिए बलिदान हुए क्रांतिवीर हैं। उन्होंने कहा कि धर्म-संस्कृति से लेकर भौगोलिक-राजनीतिक इतिहास में यूरोपीय दृष्टि ने हमारे गौरवपूर्ण व वैज्ञानिक तर्कपूर्ण तथ्यों को दबा दिया।

भारत में अब तक आक्रमणकारियों का इतिहास पढ़ाया जाता रहा है और इससे पूर्व और पश्चात के गौरव, वैभव, संघर्ष और प्रतिरोध का इतिहास नहीं पढ़ाया गया है।

अधिवेशन में तय किया गया कि आमजन के बीच भारत के ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर अब तक पनपे असमंजस को दूर करने के लिए प्रिंट, डिजिटल सहित विभिन्न माध्यमों का उपयोग कर जानकारी प्रसारित करनी होगी। भारतीय वेद-उपनिषद-पुराण भारत के इतिहास के मुख्य स्त्रोत हैं, लेकिन वे संस्कृत में हैं। यूरोपियन इतिहासकारों ने इनका अनुवाद अपने दृष्टिकोण से किया। इसलिए हमें संस्कृत का अध्ययन भी बढ़ाना होगा और भारतीय दृष्टिकोण से इनका अनुवाद करना होगा।

वरिष्ठ इतिहासविद् श्री मोहनलाल साहू को सर्वसम्मति से राजस्थान का क्षेत्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। राजस्थान क्षेत्र के संगठन सचिव श्री छगनलाल बोहरा ने बताया कि सम्मेलन में राजस्थान की तीनों प्रांत इकाइयों (जोधपुर, जयपुर व चित्तौड़) से बड़ी संख्या में पदाधिकारी व कार्यकर्ता शामिल हुए।

होली आई रे फागण री मस्ती छाई रे

■ धर्मेन्द्र कुमार, हिण्डौन

होली आई रे फागण री मस्ती छाई भाई रे, कि होली आई रे ।
राम प्रभु की जन्मभूमि पर, मन्दिर भव्य बनाया है,
वर्षों के संघर्षों ने ही यह शुभ दिन दिखलाया है।
शपथ राम की खाई, पूरी कर दिखलाई रे, कि होली आई रे

राम लला निज धाम पधारे, समरसता का भाव जगाने,
केवट का सम्मान बढ़ाने, मां शबरी से बेर खाने ।
ऊंच नीच का भेद भूल पाटेंगे खाई रे, कि होली आई रे

स्वर्णमयी लंका नहीं चाही, अवधपुरी की धूलि प्यारी,
जननी और जन्मभूमि की, महिमा अपरम्पार न्यारी।
स्वदेशी, स्वदेश प्रेम की बात सिखाई रे, कि होली आई रे
पॉलिथीन के बढ़ जाने से, धरती हुई बेहाल है,
चहुं ओर बढ़ रहा प्रदूषण, सिर मंडराता काल है।
पर्यावरण बचाओ, जिम्मेदारी आई रे, कि होली आई रे

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा, रामराज अब आएगा,
हर व्यक्ति दायित्व समझ, कर्तव्य नियम अपनाएगा।
अनुशासन पालन करने की शपथ है खाई रे, कि होली आई रे

मातृशक्ति का मान करें, बुजुर्गो का सत्कार करें,
भोजन भाषा व्यवहार में, भारतीय संस्कार भरें।
मज़हबियों की चाल से बचना बहन अर भाई रे, कि होली आई रे

"जब तक मनुष्य के जीवन में समाज हित का भाव नहीं आयेगा, तब तक राष्ट्र की समृद्धि संभव नहीं।"

"हमारी मातृभूमि भारत, एक रूप में ही माता, पिता एवं गुरु तीनों का कर्त्तव्य हमारे प्रति पूर्ण करती है।"

–श्री गुरुजी

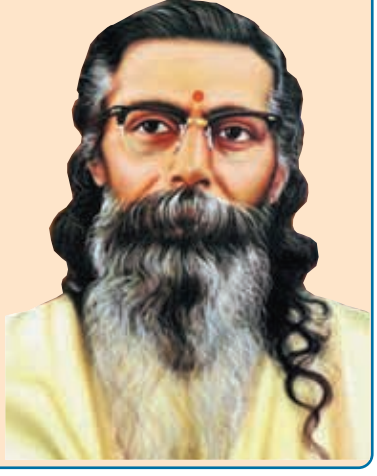

गोबर-गोमूत्र के उपयोग का दिया जा रहा है प्रशिक्षण

प्रशिक्षित किसानों ने कहा- गोबर व गोमूत्र के इतने लाभों का हमें तो पता ही नहीं था

गोसेवा परिवार समिति, जयपुर द्वारा गांव-गांव में किसानों को गोबर- गोमूत्र के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। गोसेवा परिवार, कोलकाता के मार्गदर्शन में ये प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मात्र एक माह में 5 प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से 14 गांवों के 75 किसानों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। प्रशिक्षण लेने वाले किसानों का कहना है कि गोबर-गोमूत्र के इतने लाभ हैं यह हमें पता नहीं था। ये किसान अब बिन-दुधारु गोवंश को आजीवन पालने को तैयार हैं।

इस प्रशिक्षण को राजस्थान के प्रत्येक गांव तक पहुँचाने के लिए गोसेवा परिवार समिति ने 100 "पूर्णकालिक गोग्राम प्रशिक्षक" तैयार करने का संकल्प लिया है। जिससे राजस्थान का हर किसान गोपालन करे और कोई भी किसान अपना गोवंश घर से निष्कासित न करे या बेचे नहीं। गोसेवा परिवार समिति का मानना है कि इसी से सम्पूर्ण गोरक्षा संभव है।

गोरक्षा हेतु गोग्राम अभियान के लिए राजस्थान के 100 ब्लॉक में

पूर्णकालिक प्रशिक्षक बनने का स्वर्णिम अवसर

गोरक्षा हेतु गांव-गांव में किसानों को गोबर-गोमूत्र का उपयोग सिखाने के लिए पूर्णकालिक प्रशिक्षक बनकर गोसेवा करने में रुचि रखने वाले युवाओं (आयु : 30-40 वर्ष, कर्मठ, सेवाभावी) के लिए स्वर्णिम अवसर।

आवेदनकर्ता की प्रशिक्षण के बाद परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा में उत्तीर्ण उम्मीदवारों को उचित मानधन और यातायात व्यय के साथ इस अभियान में जुड़ने का अवसर मिलेगा।

इच्छुक व्यक्ति अपना नाम और पता लिखकर इस नंबर (93310 27471) पर व्हाट्सएप करें, अनावश्यक फोन न करें।

गोसेवा परिवार समिति, जयपुर

बोधकथा

सुख का सूत्र

एक व्यक्ति अपने गुरु के पास गया और बोला, गुरुदेव! सुखी होने का कोई उपाय बताइए।

गुरु ने कहा, ''एक काम करो, जो आदमी सबसे सुखी है, उसके पहने हुए जूते लेकर आओ। फिर मैं सुखी होने का उपाय बता दूंगा।'' शिष्य ने एक घर में जाकर पूछा, ''भाई, तुम तो बहुत सुखी लगते हो। अपने जूते आज के लिए मुझे दे दो।'' उसने कहा, ''कमाल करते हो भाई! मेरा पड़ोसी इतना बदमाश है कि क्या कहूँ? ऐसी स्थिति में मैं सुखी कैसे रह सकता हूं? मैं तो बहुत दु:खी हूँ।''

दूसरे घर में गया तो वह बोला,'' अब क्या कहूं भाई? सुख की तो बात ही मत करो। मैं तो पत्नी की वजह से बहुत परेशान हूं। ऐसी जिंदगी बिताने से तो अच्छा है कि कहीं जाकर साधु बन जाऊं।'' वह सैकड़ों घरों के चक्कर लगा आया। सुखी आदमी के जूते मिलना तो दूर खुद के ही जूते घिस गए।

शाम को गुरु के पास आया और बोला, मैं तो घूमते-घूमते परेशान हो गया। न तो कोई सुखी मिला और न सुखी आदमी के जूते।

गुरु ने पूछा,'' लोग क्यों दु:खी हैं? उन्हें किस बात का दु:ख है?'' उसने कहा, किसी का पड़ोसी खराब है। कोई पत्नी से परेशान, कोई पति से दु:खी तो कोई पुत्र से परेशान है।

गुरु ने बताया ''दूसरे की ओर नहीं, बल्कि अपनी ओर देखो। खुद में झांको। खुद की काबिलियत पर गौर करो। दूसरों को देखकर अपने रास्ते मत बदलो। खुद को सुनो, खुद को देखो। यही सुख का सूत्र है।

वर्ग पहेली

वर्गों में राजस्थान के नवीन जिलों में से 12 जिलों के नाम दिए हुए हैं। उन्हें खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए

ति	अ	दू	दू	रा	भ	गं
जा	नू	च	दी	पु	स	गा
रा	प	पु	लौ	ह	लूं	पु
डी	ग	श्री	फ	शा	ब	र
स	ढ़	के	क	ड़ी	र	सि
नी	म	का	था	ना	चौ	टी
बा	लो	त	रा	मी	सां	क

उत्तर: नीमकाथाना, अनूपगढ़, डीग, गंगापुरसिटी, दूदू, तिजारा, केकड़ी, फलौदी, सांचौर, सलूंबर, शाहपुरा, बालोतरा

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल प्रश्नोत्तरी - 51

बाल मित्रों, 16 जनवरी का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 05 अप्रैल, 2024**

1. महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में लिखा अमर ग्रंथ कौन सा है?
(क) रामायण (ख) रामचरितमानस (ग) महाभारत (घ) गीत गोविन्दम्
2. स्वाधीन भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन थे?
(क) राजगोपालाचारी (ख) लार्ड माउंटबेटेन (ग) डलहौजी (घ) विलियम बैंटिक
3. रामलला दर्शन के लिए कितनी विशेष ट्रेनें चलाई गई हैं?
(क) दो हजार (ख) एक हजार (ग) तीन हजार (घ) चार हजार
4. अमेरिका में रामोत्सव का आयोजन कितने समय तक चला?
(क) सात माह (ख) दो माह (ग) एक माह (घ) तीन माह
5. अयोध्या में लंगर लगाने वाले वर्तमान निहंग बाबाजी का नाम बताइए?
(क) हरजीत सिंह (ख) परमजीत सिंह (ग) फकीर सिंह (घ) मनप्रीत सिंह
6. अयोध्या के लिए मुम्बई से पैदल जाने वाली मुस्लिम महिला का नाम बताइए?
(क) सायरा शेख (ख) शबनम शेख (ग) समीरा शेख (घ) सलमा शेख
7. दूसरा काशी तमिल संगमम् का आयोजन कहाँ हुआ?
(क) अयोध्या (ख) वाराणसी (ग) मथुरा (घ) उज्जैन
8. पूर्वोत्तर का संत मणिकांचन सम्मेलन-2023 का आयोजन कहाँ हुआ?
(क) असम (ख) मणिपुर (ग) मेघालय (घ) त्रिपुरा
9. वायुसेना का ध्येय वाक्य 'नभ: स्पृशं दीप्तम्' किससे लिया गया है?
(क) वेद (ख) उपनिषद् (ग) श्रीमद्भगवतगीता (घ) रामायण
10. गीता जयंती पर 60 हजार महिलाओं द्वारा एक साथ कहाँ शंखनाद किया गया?
(क) कोलकाता (ख) मुम्बई (ग) दिल्ली (घ) राजस्थान

चित्र में खोजो

चित्र में निम्न 10 को खोजिए

बाल प्रश्नोत्तरी-49 के परिणाम

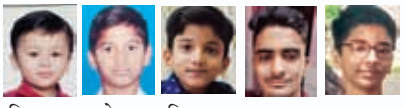

विहान जयेन्द्र विशाल भागचन्द प्रभात

1. विहान जैन, महारानी फार्म, जयपुर
2. जयेन्द्र शर्मा, बजरंग नगर, दौसा
3. विशाल, नया सानवाड़ा, सिरोही
4. भागचन्द जाट, बोरड़ा, शाहपुरा
5. प्रभात विश्वकर्मा, रायपुर, झालावाड़
6. मयंक बुनकर, मालपुरा, टोंक
7. हर्षिता माथुर, सी स्कीम, जयपुर
8. नमन सिंह गोहिल, भगवतगढ़, सवाईमाधोपुर
9. सुरेन्द्र कुमार, इन्द्रापुरी कालोनी, जालौर
10. दिव्यांशी जंगम, अटरू, बांरा

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 51)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

इतिहास से सबक लेने की आवश्यकता

इतिहास से शिक्षा लेने की बात यह है कि विधर्मियों ने अत्याचारों की पराकाष्ठा तक हमारे महापुरुषों पर अत्याचार किए हैं। पांच और आठ साल के बाबा जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी को मुसलमान नहीं बनने पर जिन्दा दीवार में चिनवा दिया और दो बड़ें साहिबजादों को युद्ध में बलिदान होने पर उनके दाह-संस्कार तक की बड़ी कीमत वसूली। भारतीयों का धन दौलत लूट कर, अन्न खा कर, मंदिर तोड़ने, गोहत्या करने, धर्मान्तरण और भारत विभाजन जैसे जघन्य अपराध किए और अब 'गजवा-ए-हिन्द' की मुहिम के तहत सम्पूर्ण भारत को मुस्लिम देश बनाने की लिए सघनता से षड्यंत्र करने में लगे हुए हैं। दूसरी और हम हिंदू अब भी हिंदू-मुस्लिम भाई-चारे का राग अलाप कर मुल्ला मीर शीरी के इस कथन को सत्य साबित कर रहे हैं कि ''हिंदूमी जनद शमशीरे इस्लाम (हिंदू ही इस्लाम के लिए तलवार चला रहे हैं)'' इसलिए इतिहास से सबक लेने और अपना कर्तव्य निश्चित करने की आवश्यकता है। *-छगनलाल बोहरा, उदयपुर*

यह मेरा हिन्दुस्तान

अंक पढ़ते ही सहजानुभूति हुई-

'धर्म की स्थापना को, अर्थ की विवेचना को, काम को उपासना बनाने आये रामजी।
मोक्ष मार्ग साधने को मनुजता संवारने को, चारों पुरुषार्थ जगाने आये रामजी।
ब्रह्मचर्य आश्रम को,गृहस्थ के पराक्रम को वानप्रस्थ का मार्ग दिखाने आये रामजी।
सिंहासन पे बैठने से पहले योग्य बनने को संन्यास का अभ्यास कराने आये रामजी।
जीवन ध्येय कर्म आचरण में पुरुषोत्तम,प्रतिमान है जिस माटी में राम रमे वह मेरा हिन्दुस्तान है।

- yogeshwashisth@gmail.com

निषाद परिवार के घर प्रधानमंत्री

16 जनवरी के अंक में प्रकाशित प्रधानमंत्री का एक जनजाति महिला के परिवार में अचानक पहुंचना, वहाँ चाय पीने की घटना बरबस ही रामायण के शबरी प्रसंग का स्मरण करा देती है। यह संवाद दैनिक समाचार पत्रों, टीवी आदि में भी प्रचारित हुआ था, किन्तु पाथेय कण के द्वारा एक अतिरिक्त जानकारी मिली। मोदी जी ने वापस लौट कर मीरा बहन को चाय सेट, ड्राइंग बुक, अन्य सामान, उपहार स्वरूप भेजे। यही विशेषता मोदी जी को अन्य नेताओं से अलग बनाती है।

- तोलाराम लाठ, बीकानेर

जैसलमेर में पाथेय कण सदस्यता अभियान

भीलवाड़ा

सिंधी सनातन परंपरा का अभिन्न अंग - हंसराम जी महाराज

भारतीय सिंधु सभा का पहला राज्य स्तरीय मातृ सम्मेलन सम्पन्न

भारतीय सिंधु सभा का पहला राज्य स्तरीय मातृशक्ति सम्मेलन गत 2 व 3 मार्च को भीलवाड़ा में हुआ। राजस्थान प्रदेश के विभिन्न जिलों से 379 संभागी मातृशक्ति सहभागी रहीं। मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर हंसराम जी महाराज ने कहा कि सिंधी कोई जाति विशेष न होकर सनातन परंपरा का ही एक अंग है। पूर्वजों की परंपरा सदैव सनातन रही है। इन्हीं परंपराओं और विचारों का पालन करने से समाज का विकास संभव है।

प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहन वाधवानी ने पश्चिम के अंधानुकरण के प्रति सावधान किया। सम्मेलन में जयपुर की डॉ. दीक्षिता अजवानी की सनातन और सिंधु सभ्यता के आपसी सहसंबंध पर लिखी पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 अप्रैल, 2024
(चैत्र कृष्ण 7 से चैत्र शुक्ल 7 तक)

जन्म दिवस

चैत्र कृ. 9 (3 अप्रैल) -प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ जयंती
चैत्र शु.1 (9 अप्रैल) - डॉ.हेडगेवार जयंती
चैत्र शु.2(10 अप्रैल) - संत झूलेलाल जयंती
चैत्र शु.3 (11 अप्रैल) - मत्स्य जयंती
11 अप्रैल (1827) - महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती
13 अप्रैल (1885) - संत कंवरराम जयंती
14 अप्रैल (1891) - बाबा साहब आम्बेडकर जयंती

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

4 अप्रैल (1946) - सागरमल गोपा का बलिदान
11 अप्रैल (1858) - वीर खाज्या और दौलत सिंह नायक का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

3 अप्रैल - हिन्दी रंगमंच दिवस
6 अप्रैल (1663) - शिवाजी महाराज द्वारा शायस्ता खां का मान-मर्दन
7 अप्रैल - विश्व स्वास्थ्य दिवस
8 अप्रैल (1929) - असेम्बली में बम का धमाका
9 अप्रैल - आर्य समाज की स्थापना
10 अप्रैल - सिंधी भाषा मान्यता दिवस
13 अप्रैल (1919) - जलियांवाला बाग नरसंहार
13 अप्रैल (वैसाखी) - खालसा पंथ की स्थापना (1699)
14 अप्रैल (1944) -आजाद हिंद फौज ने मोइरांग(मणिपुर) पर कब्जा कर तिरंगा फहराया

सांस्कृतिक पर्व

6 अप्रैल - मेला कैला देवी **9 अप्रैल**- वर्ष प्रतिपदा, बसंत नवरात्रा प्रारंभ
10 अप्रैल - चेटीचण्ड **13 अप्रैल** - वैसाखी

उत्तर बाल प्रश्नोतरी(49)-1.क 2.क 3.क 4.ख 5.ख 6.क 7.क 8.ख 9.क 10.ग

पंचांग- चैत्र (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945
(26 मार्च से 8 अप्रैल 2024 तक)

भाई दोज- 27 मार्च, **चतुर्थी व्रत**-28 मार्च, **रंग पंचमी**- 30 मार्च, **रांधा पुआ**- 31 मार्च, **शीतला सप्तमी (बास्योड़ा)**-1 अप्रैल, **पाप मोचनी एकादशी** -5 अप्रैल, **पंचक प्रारंभ**-5 अप्रैल (प्रातः 7:12 बजे), **शनि प्रदोष व्रत**-6 अप्रैल, **कैलादेवी मेला प्रारंभ**-6 अप्रैल, **देव-पितृकार्य अमावस्या**- 8 अप्रैल

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 26 मार्च को **कन्या** राशि में, 27 से 29 मार्च को **तुला** राशि में, 30-31 मार्च को नीच की राशि **वृश्चिक** में, 1-2 अप्रैल को **धनु** राशि में, 3 से 5 अप्रैल **मकर** राशि में, 6-7 अप्रैल **कुंभ** राशि में तथा 8 अप्रैल को **मीन** राशि में गोचर करेंगे।

चैत्र कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **मंगल** क्रमशः पूर्ववत मीन व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। **शुक्र** 31 मार्च को सायं 4:46 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** मेष राशि में रहते हुए 1 अप्रैल को रात 3:45 बजे वक्री होंगे।

श्रद्धांजलि

सुप्रसिद्ध गजल गायक श्री पंकज उधास के निधन का समाचार अत्यंत दु:खदायक है। हमारी संवेदनाएं उनके परिवार के सदस्यों और अनगिनत प्रशंसकों के साथ हैं। पंकज उधास ने अपनी सुरीली और मनमोहक आवाज से लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। गजल सम्राट अब नहीं रहे। उनके निधन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हार्दिक संवेदना के साथ उनकी स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। हम ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। ॐ शांति।।

(मोहन भागवत)
सरसंघचालक, रा.स्वं.संघ

(दत्तात्रेय होसबाले)
सरकार्यवाह, रा.स्वं.संघ

पाथेय कण परिवार आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

सैकड़ों वर्षों की पराधीनता ने भारतीय जनमानस को अपने 'स्वत्व बोध' और 'राष्ट्रीय गौरव' का विस्मरण करा दिया था। विदेशी आक्रमणकारियों के प्रभाव से भारतीय समाज अनेक कुरीतियों के कुचक्र में फंस चुका था। ऐसे समय में 12 फरवरी, 1824 'फाल्गुन कृ.दशमी' के दिन **महर्षि दयानन्द सरस्वती** का आविर्भाव हुआ। जिसने वर्षों से सोये समाज को गहरी नींद से झंझोड़कर उठाया और भारत माता को विदेशी दासता से मुक्त कराने का मार्ग प्रशस्त किया।

SURYA

भारत के साथ
– प्रगति के पथ पर –
अग्रसर

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING

PROFESSIONAL LIGHTING

APPLIANCES

FANS

PVC PIPES

STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

08

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज रावत

मातृभक्त शिवा को भारतीय ग्रंथों के अध्ययन के साथ, अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण एवं श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की शिक्षा से पूरित किया।

उधर 'शिवा' के पिता शाहजी सुल्तानों व मुगलों के संघर्षों में ही उलझे थे।... उनके युद्ध कौशल व वीरता से सब सुल्तान व मुगल भयभीत भी रहते और अपने साथ भी रखना चाहते... किंतु सबका यही प्रयास रहता कि शाहजी महाराष्ट्र से दूर ही रहें...। यदा-कदा ही परिवार से मिल पाते।

जीजाबाई शिवाजी को लेकर पुणे आ गयी...

जीजाबाई ने पुणे में मंदिरों व मकानों का नव-निर्माण करवाया... पुणे को छोड़ गये लौटने लगें... नई फसल होने का समय आया तो सोने का हल बनवाया गया...

शुभ मुहूर्त में बालक 'शिवाजी' ने खेत जोतकर शुभारंभ किया। सारी शंकाए मिटा दी।

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-31 मार्च,2024)
(10 मार्च को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 मार्च, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,

_____

_____

_____